शोध-चिंतन पत्रिका : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई शोध पत्रिका
अंक : 2; जनवरी-जून, 2021; पृष्ठ संख्या : 43-53

भूपेन हाजरिका के गीतों में असमीया लोकजीवन

✍ उदिप्त तालुकदार

शोध-सार :

कलाकार द्वारा किया गया सृजन उनके विचारों की स्वच्छंद अभिव्यंजना है। अंतर्मन से निःसृत ये विचार समाज-सापेक्ष हैं। युगचेता प्रत्येक कलाकार की सृष्टि में समाज एवं समाज के लोगों के जीवन का हर पहलू प्रस्फुटित होता है। इस प्रकार लोकजीवन को अपने गीतों के माध्यम से अभिव्यक्ति देनेवाले जातीय चेतना से प्रेरित विश्व संगीत-जगत का एक उज्ज्वलतम नक्षत्र हैं भूपेन हाजरिका। उन्होंने अपने गीतों में असमीया लोकजीवन के खान-पान, रहन-सहन की परंपरा, क्रियाकलाप, कला-कुशलता, हस्तशिल्प, लोकवाद्य, लोकविश्वास, त्योहार आदि तत्वों की एक पूर्णांग छवि खींचने की सफल कोशिश की है। भूपेन हाजरिका ने गीतों के माध्यम से लोकजीवन के इन पहलुओं को किस प्रकार अभिव्यंजित किया है, उसी का एक अवलोकन इस शोधालेख में किया गया है।

बीज शब्द : *भूपेन हाजरिका,समाज-जीवन, परंपरा, कृषि, बिहु।*

1. प्रस्तावना :

प्राचीन समय से मानव समाज एवं सभ्यता में गीत मानवीय अनुभूतियों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम स्वरूप है। लयात्मकता की प्रवृत्ति के कारण गीत को मनुष्य ने हमेशा करीब पाया है। समाज में लोगों के बीच मौखिक स्तर पर गीतों का प्रचलन एक सहज प्रवृत्ति है। परंतु हमारे समाज में प्रतिभासंपन्न व्यक्तियों का एक ऐसा भी वर्ग है, जो समाज से प्रभाव ग्रहण कर अधिक सशक्त एवं कलात्मक रूप में अपनी अनुभूतियों को गीतों के माध्यम से अभिव्यक्ति देते हैं। विश्व संगीत-जगत के ऐसे ही एक लब्ध प्रतिष्ठ हस्ताक्षर हैं भूपेन हाजरिका। भूपेन हाजरिका ने मानव जीवन एवं समाज से तत्वों को लेकर उनको कलात्मक तरीके से जनसाधारण के सम्मुख प्रस्तुत किया है। शायद इसलिए समाज के हर दर्जे के लोग उनकी सर्जनात्मक रचनाओं में खुद को ढूँढ पाते हैं। एक युगचेता संगीतकार की हैसियत से उन्होंने अपने गीतों में समाज-जीवन के तमाम पहलुओं को उकेरा है। विश्व दरबार में प्रतिष्ठित भूपेन हाजरिका की जड़ भारतवर्ष के उत्तर-पूर्वी प्रांत में स्थित सांस्कृतिक विविधताओं से युक्त असम प्रदेश में है। इसलिए असमीया लोकजीवन के विविध तत्वों का प्रतिफलन उनके गीतों में सहज ही देखा जा सकता है।

समाज विशेष में लोग कुछ निश्चित रीति-रिवाजों से परिचालित होते हैं,कुछ विश्वासों को मानकर चलते हैं, उनके साथ स्वकीय खान-पान, वेश-भूषा, त्योहार, आजीविका तथा समाज-व्यवस्था की परंपरा विद्यमान रहती है। इन सभी तत्वों को समन्वित रूप में उस समाज विशेष का लोकजीवन कहा जा सकता है। भूपेन हाजरिका असमीया जाति एवं समाज के प्रति प्रतिबद्ध एक चेतस संगीतकार हैं। इसलिए उनके गीतों में असमीया लोकजीवन का सुंदर चित्रण दृष्टिगोचर होता है।

इस आलेख में संपूर्ण विवेचन भूपेन हाजरिका के असमीया गीतों के आधार पर किया गया है। इसलिए भूपेन हाजरिका के असमीया गीतों के संकलन को आधार-ग्रंथ के रूप में ग्रहण किया गया है। तदुपरांत उनके गीतों के विचार-विश्लेषण से जुड़े कई समीक्षात्मक ग्रंथों की सहायता आलेख के प्रस्तुतीकरण के दौरान ली गई हैं। आलेख में व्याख्यात्मक पद्धति की प्रधानता के साथ-साथ विश्लेषणात्मक पद्धति को भी अपनाया गया है।

यहाँ और एक बात उल्लेखनीय है कि हिंदी भाषा के 'य' वर्ण के लिए असमीया भाषा में दो वर्ण प्रयोग में हैं- एक का उच्चारण 'य' ही है और दूसरे का उच्चारण 'ज' जैसा होता है। असमीया 'य' के

लिए हिंदी में भी 'य' रखा गया है, पर असमीया के 'य' के 'ज' वाले उच्चारण के लिए लिप्यंतरण में 'य़' का प्रयोग किया गया है।

2. विश्लेषण :

जब हम लोकजीवन की बात करते हैं, तो उसके साथ ग्रामीण परिवेश का आना अवश्यंभावी है। असमीया लोकजीवन के प्राण यहाँ के कृषिकेंद्रिक ग्रामीण समाज में निहित हैं। असम की जलवायु कृषिकार्य के लिए अत्यंत अनुकूल है। इसलिए यहाँ के समाज-जीवन में अधिकतर लोगों ने कृषि को आजीविका के रूप में ग्रहण किया है। इस कृषिकेंद्रिक ग्रामीण समाज एवं लोगों की छवि भूपेन हाजरिका के गीतों में स्वतः अभिव्यक्त होती है।

2.1. आजीविका के आधार का चित्रण :

असमीया लोकजीवन की सत्ता उसके गाँवों में निवास करती है। हाजरिका ने अपने गीतों के जरिए ग्राम एवं कृषि से ही असम एवं असमीया के मान-सम्मान की रक्षा की बात की है-

ॲ आमि तेजाल गाँवलीया
गाँवरे राखिम मान।
नाङ्ल-य़ुँवलिरे पृथिवी सजाऔँ
रॅदत तिरेबिराय जान।
लहपहीया मुगाबरणीया
मलयात हालिछे धान
गाँवरे राखिम मान।

(हाजरिका 2015:4)

इन पंक्तियों में असमीया युवाओं ने गाँव के जरिए मान-सम्मान की रक्षा की, हल से धरती को सजाने और खेतों में लहलहाते पके धानों से युक्त ग्रामीण परिवेश से मान रखने की इच्छा व्यक्त की है।

असम में नदी, झील आदि की प्रचुरता है। ऐसे में नदी या झीलों के किनारे बसने वाले लोग मछली पकड़ने के कर्म को आजीविका के रूप में ग्रहण करते हैं। नदी, झील, तालाब आदि से मछली पकड़ने की परंपरा असमीया समाज में विद्यमान है। इसके पीछे दो कारण साफ़ नज़र आते हैं – पहला, व्यक्तिगत स्तर की आवश्यकता की पूर्ति और दूसरा है आजीविका। यहाँ तक कि तीन बिहुओं में से माघ बिहु के दौरान सामुहिक रूप से मछली पकड़ना एक प्रथा के रूप में असमीया समाज में प्रचलित है। असमीया लोकसमाज में मछली पकड़ने के लिए घरेलू तौर पर तरह-तरह के साधनों का उपयोग किया जाता है। भूपेन हाजरिका के गीतों में इसका एक अत्यंत सूक्ष्म वर्णन देखने को मिलता है -

माछ मारौँ दिचाङत
पानी खाऔँ कलङत
हॅ माछ मारौँ दिचाङत

पानी खाओँ कलङत
टुलुङा नावते उठि।
.....
एकेटि बरशी बाबा ऐ चेनाइटि
चेङेली मारिबर चिपत
अँ गाभरु देखिले मिचिकाइ हाँहिबा
आहिब चकुरे टिपत।

(हाजरिका 2015:91)

इन पंक्तियों में भूपेन हाजरिका ने डोंगी में बैठकर दिचाङ नदी में मछली पकड़ने और कलङ नदी में पानी पीने की बात की है।

मछली पकड़ने के लिए परंपरागत तौर पर इस्तेमाल की जानेवाली *बरशी* (काँटा) आदि का उल्लेख उनके गीतों में हुआ है। 'परहि पुवा टुलुङा नावते' शीर्षक गाने में रङमन नामक पात्र के माध्यम से भूपेन हाजरिका ने असमीया मछुवारों की छवि खींचने का एक सार्थक प्रयास किया है।

2.2. असमीया समाज की उत्सवप्रिय-प्रवृत्ति का वर्णन :

असमीया लोग उत्सवप्रिय प्रवृत्ति के होते हैं। वैशाख और बिहु का असमीया जनजीवन में एक गहरा प्रभाव है। वैशाख महीने के आगमन के साथ ही असमीया लोग साल भर के समस्त दुःख-कष्टों को भुलाकर एक नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ते हैं। वैशाख प्रत्येक असमीया के मन में नई चेतना का सिंचन करता है। असमीया लोकजीवन में वैशाख के महत्व को स्वीकार करते हुए भूपेन हाजरिका ने 'बहाग माथोँ एटि ऋतु नहय' शीर्षक गाने में वैशाख के महत्व का चित्रण किया है-

बॅहाग माथोँ एटि ऋतु नहय
नहय बॅहाग एटि माह
असमीया जातिर इ आयुस-रेखा
गणजीवनर इ साह।

(हाजरिका 2015:340)

इन पंक्तियों में कहा गया है कि वैशाख असमीया समाज-जीवन के लिए सिर्फ़ एक महीना या ऋतु नहीं है। यह असमीया जाति के लिए साहस और जीवन-रेखा स्वरूप है।

बिहु के अतिरिक्त असमीया लोकसमाज में कार्तिक महीने में मनाए जानेवाली दीपावली, माघ बिहु के उरुका, रास महोत्सव, चाय जनजाति के विविध त्योहारों को उनके गीतों में स्थान मिला है।

2.3. पारंपरिक रीति-रिवाज का चित्रण :

वैशाख महीने के आने के साथ ही असमीया लोकजीवन में हर्षोल्लास के साथ बिहु मनाने की परंपरा शुरू हो जाती है। बिहु असम का जातीय त्योहार है तथा इसके साथ प्रत्येक असमीया की आवेग-अनुभूति जुड़ी हुई है। असमीया समाज-जीवन में बहाग बिहु, काति बिहु और माघ बिहु - इन तीन बिहुओं का प्रचलन है। इन तीन बिहुओं

तथा असमीया समाज एवं लोगों पर इन तीन बिहुओं के प्रभाव को अंकन करने का एक सफल प्रयास भूपेन हाजरिका के गीतों में देखा जा सकता है। बिहु के साथ असमीया समाज में कई परंपराएँ जुड़ी हुई हैं। जैसे – बॅहाग बिहु के दौरान *माह-हालधि* (उड़द-हल्दी) का उबटन शरीर में लगाकर नहाया जाता है। इसके अलावा माघ बिहु के दौरान असमीया समाज में विविध खेलों की परम्पराएँ विद्यमान हैं, जिनमें भैंसों की लड़ाई एक अन्यतम खेल है। उड़द-हल्दी का वर्णन 'बिहुटि बछरि आहिबा' शीर्षक गीत में इस प्रकार हुआ है -

बिहुटि बछरि आहिबा
असमी आइके जगाबा।
बिपदर कालतो माह-हालधिरे
जातिटोर देह-मन धुवाबा।।

(हाजरिका 2015:351)

इन पंक्तियों के माध्यम से भूपेन हाजरिका बिहु को हर साल आने के लिए अनुरोध करते हैं। वे बिहु से आग्रह करते हुए कहते हैं कि हर साल आकर असम-भूमि को जगाना। मुश्क़िल समय में भी उड़द-हल्दी से संपूर्ण जाति के तन-मन को नहलाना।

2.4. खान-पान का चित्रण :

असमीया समाज में कई परंपरागत व्यंजन तथा खानों का प्रचलन हैं, जैसे – अरबी, *ढेंकीया शाग*, टमाटर के साथ इलिश मछली, *तिलपिठा*, दही, चिउड़ा आदि। इन व्यंजनों का एक आकर्षक वर्णन भूपेन हाजरिका गीतों में हुआ है -

रौ कुढ़ि चेनिपुठि
चितलरे कलठि
लगते शाक लफा लाइ
कि कॅत बिचारि गै
कोने हाबाथुरि खाय-ऐ राम
कोने हावाथुरि खाय ?
न चाउलेरे चिरा भाजि दिम ऐ
बाटि भरि भरि खाव।

(हाजरिका 2015: 269)

रोहू, चीतल, कुड़ि, पोठी और उसके साथ *लाइ, लफा* जैसे शाग ढूँढ़ कर कहाँ ठोकर खाए? नए चावल से चिउड़ा बनाकर दूँगा कटोरा भरकर खाना।

2.5. असमीया सांस्कृतिक जीवन का चित्रण :

असमीया समाज-जीवन में शंकरदेव का योगदान उल्लेखनीय है। उनकी रचनाएँ असमीया समाज के लिए पथ-प्रदर्शक स्वरूप हैं। बरगीत, भाओना, नाम-कीर्तन के सुरों की धारा प्रत्येक असमीया के अंतर्मन में प्रवहमान है। शंकरदेव तथा

उनके शिष्यों द्वारा असम के विभिन्न स्थानों में निर्माण किये जानेवाले नामघरों के साथ असमीया लोकजीवन का निगूढ़ संबंध है। इसका प्रतिफलन भूपेन हाजरिका के 'अँ मोर गुरु ए' शीर्षक गीत में हुआ है। उन्होंने लिखा है -

नामघर साजिलाँ, राइज थापिलाँ
एकतार आसनत आनि
भाओना सोणते बरगीत सुवगा
प्रचारिलाँ देवबाणी
मोर गुरु ऐ, प्रचारिलाँ देवबाणी।।

(हाजरिका 2015:1)

इन पंक्तियों में हाजरिका ने गुरु शंकरदेव का स्मरण करते हुए तथा उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहते हैं कि हे मेरे गुरु, आपने नामघर की स्थापना कर असमीया लोगों को एकता की डोरी से बाँधा तथा भाओना, बरगीत जैसी अपनी रचनाओं से देववाणी का प्रचार किया।

असमीया समाज में बुनाई-कढ़ाई की एक समृद्ध परंपरा रही है। असमीया समाज में प्रचलित ज्यादातर वेश-भूषाओं की बुनावट पारंपरिक तौर पर घरों में ही होती है। इसमें करघे की भूमिका सर्वोपरि है। करघे में कपड़े बुनने की कला में असमीया महिलाएँ निपुण हैं। भूपेन हाजरिका के गीतों में करघे का महत्व तथा असमीया महिलाओं के कपड़े बुनने की निपुणता का सजीव वर्णन हुआ है।

भूपेन हाजरिका के गीतों की एक ख़ासियत यह है कि उन्होंने असमीया लोकगीतों, जैसे - *बिहुगीत*, *बियानाम* (विवाह गीत), *निचुकणि गीत* (लोरी), *देहबिचार*, *ऐनितम*, *जिकिर*, *झुमुर* आदि से प्रभाव ग्रहण कर तथा इन लोकगीतों के सुरों पर आधारित अनेक गीतों की सर्जना की है। इनके अतिरिक्त बिहुगीतों के एक अन्यतम भेद *बनगीत* के माध्यम से असमीया समाज में बिहु के हर्षोल्लास के दौरान युवक-युवतियों की प्रेमाभिव्यक्ति का चित्रण करते हैं। इस प्रकार का वर्णन हाजरिका के 'पाहारर सिपारे' शीर्षक गाने में देखने को मिलता है।

असमीया लोकजीवन में तांबूल-पान का भी विशेष महत्व है। घर में अतिथि आने पर उनके सम्मुख सम्मानसूचक रूप में तांबूल-पान रखा जाता है। इसके अलावा पूजा, विवाह, नामघर, गुरुगृह आदि में भी तांबूल-पान का व्यापक प्रयोग किया जाता है। यहाँ तक कि युवक-युवती तांबूल-पान के जरिए बिहु के दौरान प्रेम-निवेदन भी करते हैं। इसकी एक छवि भूपेन हाजरिका के गीत में इस प्रकार व्यक्त हुई है -

तामोल सजोवा, चेनेह मिहलाइ
आजि किनो खाओँ, बुजा देखोँ नाइ।

तुमि खाबा एखन, आमि खाम एखन
सेइ मिठा सोवादते
गुणाफुलर रिहाखनि उरि गॅलगै।

(हाजरिका 2015:143)

असमीया संस्कृति में प्रेम-निवेदन में तांबूल-पान के महत्व को ध्यान में रखते हुए इन पंक्तियों में कहा गया है कि अपने प्यार के तांबूल को सजाइए। आज क्या खाऊ क्या न खाऊ कुछ समझ में नहीं आ रहा है। प्यार से परोसे हुए तांबूल का एक हिस्सा तुम खाना और एक हिस्सा मैं खाऊँगा। इस प्रकार तांबूल के स्वाद में असमीया समाज में युवक-युवतियों के बीच प्रेम-निवेदन का प्रतीक स्वरूप गुणाफूल से बनी हुई रिहा (असमीया चादर की तरह महिलाओं द्वरा पहने जाने वाला वस्त्र) उड़ जाती है।

2.6. लोकवाद्य का चित्रण :

भूपेन हजारिका के गीतों में असमीया लोकवाद्यों का सुंदर उल्लेख मिलता है। 'कोन चिफुङर सुरे' पंक्ति में *चिफुङ* शब्द के जरिए असमीया लोकवाद्य का उल्लेख है। *चिफुङ* बड़ो जनजाति का लोकवाद्य है। यह एक प्रकार की बांसुरी है। 'हे हे ढोले डगरे' शीर्षक गीत में असम का मुगा शिल्प, बाँस शिल्प, खासी युवतियों द्वारा चीड़ के पेड़ की लकड़ी से बनाई जानेवाली अगरबत्ती, असमीया लोकवाद्य *ढोल-डगर*, बाँसुरी, *बेणु*, *मादल*, *ढाँक*, *पेंपा*, *गगना*, बंशी, *डंबरु* (डमरू) आदि का उल्लेख मिलता है। भूपेन हाजरिका के कई गीतों में असमीया वेश-भूषा का सुंदर चित्रण हुआ है - *रिहा*, *पाट* के पाग (पगड़ी), *उरणि*, *चादर*, *मेखेला*, *हाँचति*, *गामोचा*, *चेलेंग*, कपास से तैयार की गई मेखेला आदि। *मुगा पलु* (रेशम के कीड़े, ईल्ली) की बात भी उनके गाने में आई है।

असमीया समाज जीवन में बाँस के पेड़ की सर्वोपरि भूमिका रहती है। गृह-निर्माण से लेकर रोजाना इस्तेमाल होनेवाली कई सामग्रियों एवं साधनों के निर्माण में बाँस के पेड़ का उपयोग होता है। यहाँ तक कि असमीया लोकवाद्यों के निर्माण में भी बाँस का उपयोग सर्वाधिक होता है। खासकर बिहुगीत के दौरान इस्तेमाल होनेवाले बाँस से निर्मित *गगना* (एक प्रकार का लोकवाद्य) का उल्लेख भूपेन हाजरिका के गीतों में कई स्थानों पर हुआ है।

2.7. लोकविश्वास का चित्रण :

कोई भी समाज-व्यवस्था विभिन्न रीति-रिवाजों से चालित होती है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक समाज-व्यवस्था में कार्य-कारण विधि के आधार पर विभिन्न प्रकार के लोकविश्वासों का प्रचलन होता है। असमीया समाज-जीवन में पशु-पक्षियों से जुड़े कई लोकविश्वासों का प्रचलन है। जैसे - असमीया

समाज में यह मान्यता है कि अगर गिद्ध घर की छत पर आकर बैठे या उल्लू विशेष प्रकार से 'निउ निउ' आवाज करे तो घर में किसी सदस्य की मृत्यु का संदेश आयेगा। इस तरह के लोकविश्वासों की झाँकी भूपेन हाजरिका के गीतों में देखने को मिलती है -

घररे चालते शगुणक बहुवाइ
मरणर सबाह नापातिबि।

(हाजरिका 2015:237)

इन पंक्तियों में असमीया समाज में प्रचलित एक लोकविश्वास का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि घर के छत में गिद्ध को बैठाकर मृत्यु की सभा का आयोजन मत करना।

2.8. साधुकथा , दंतकथा आदि का चित्रण :

हाजरिका के गीतों में पुराकथा, किंवदंति, दंतकथा, *साधुकथा* (नीतिपरक किस्सा) आदि का उल्लेख मिलता है। 'जोनाकर राति' शीर्षक गाने में *साधुकथा* (नीतिपरक किस्सा) की संरचना का प्रयोग ध्यान देने योग्य है -

आगलति कलपात लरे चरे
मनरे पखिटि मोर उरे उरे
कोन चिफुङर सुरे सुरे।

(हाजरिका 2015:237)

इन पंक्तियों का अर्थ है कि केले के पत्ते का अगला भाग हवा में लहराता है और उसी के साथ चिफुङ (बड़ो जनजाति में प्रचलित बाँसुरी) की ध्वनि में मेरे मन की पक्षी उड़ने लगती है।

गीतों की उपर्युक्त पंक्तियाँ असमीया समाज-जीवन में प्रचलित 'चिलनीर जीयेकर साधु' नामक एक कहानी की याद दिलाती हैं।

2.9. लोकक्रीड़ा का चित्रण :

भूपेन हाजरिका के गीतों में लोकक्रीड़ा का अंकन उल्लेखनीय है। उदाहरणस्वरूप 'शकुंतला' चलचित्र में अंगूठी गुम होने जाने के दृश्य में असम की लोकक्रीड़ा की कथावस्तु और आंगिक का व्यवहार किया गया है -

अलौगुटि तलौगुटि
कोन क'त लटिघटि
कचुपातत लाइ...

(हाजरिका 2015:52)

इन पंक्तियों में असमीया समाज में बच्चों द्वारा खेले जानेवाले *अलौगुटि तलौगुटि, लुकाभाकु* (लुकाछिपी) जैसे खेलों का उल्लेख है।

2.10. जनजातीय संस्कृति का चित्रण :

असमीया समाज एक ऐसा गुलदस्ता है, जिसमें भिन्न रंगी जाति-जनजातियाँ समन्वित

होकर सौंदर्य की आभा बिखेर रही हैं। उन्होंने कार्बि जनजाति, मिचिङ जनजाति, चाय जनजाति जैसी कई जनजातियों के सांस्कृतिक-सामाजिक जीवन की विशेषताओं को अपने गीतों में प्रस्फुटित किया है। 'अँ मिचिङ डेकाटि' शीर्षक गाने में मिचिङ जनजाति के स्त्री और पुरुष की वेश-भूषा का एक परिचय हमें मिलता है -

मिबु गालुक चोलाटि
पेरेरुम्बङ् चादरखन कियनो पिंधिलि ?
मूरत देखोन दुमेर दि गामोचा आँटिलि
आरु तोरे पुरुष देहाते फुटि फुटि उठिछे
सेउज रङर जीया जीया ऐनितमटि।

बोलौँ.....

अँ मिचिङ गाभरु
एगे मेखेलात तइ एंधार सानिलि
अँ रिहाखनित तामुलि टाकार रङा तरा बाछिलि !
डेकाटिर सोणर बाँहीर सँते गुंगाङ् बजालि
सरियहर फुल येन रिबिगाचेङकनि तइ
बुकुते बांधिलि
आरु कँपि उठिल दिचाङरे
मिठा मिठा मिठा ढौटि।

(हाजरिका 2015:29)

इन पंक्तियों में कहा गया है कि मिबु गालुक कमीज और पेरेरुम्बङ् चादर को क्यों पहनी है? सिर पर दो मोड़ देकर गमछा लगाया है और तुम्हारे शरीर में हरे रंग का ऐनितम चमक रहा है। आगे कहा गया है कि हे मिचिङ युवती एगे मेखेला में तुमने काले रंग को डाला है तो रिहा में लाल रंग के तारों की संरचना बुनी है। युवक के सोने की बाँसुरी के साथ तुमने गुंगाङ् बजाया। सरसो के फूल की जैसी रिबिगाचेङ् को तुमने सीने में पहना है। इसे देखकर दिचाङ नदी की मीठी मीठी लहरें काँपने लगी।

इस गीत में मिचिङ जनजाति के स्त्री और पुरुष की वेश-भूषा का एक परिचय हमें मिल जाता है। मिचिङ जनजीवन की परंपरागत वेश-भूषा - *रिबि गाचेङ्, मिबुगालुक, पेबेरुम्बङ्, एगे* आदि तथा लोकवाद्य - *पेंपी, गुंगाङ्* के साथ-साथ जंकि और पानेइ की प्रेमकथा को दिखाने का प्रयास किया है।

'डिफु हॅल तोमार नाम' शीर्षक गीत में कार्बि जनजाति के *चमांकान* त्योहार और उसके साथ संबंधित लोकनृत्य, कार्बि देवता की पूजा की वेदी में प्रस्तुत किए जानेवाले *थेकारकिबि* प्रथा से किस प्रकार *कार्बि* नाम पड़ा, उसकी एक सुंदर अभिव्यक्ति हुई है। चाय जनजाति के लिए उन्होंने 'आश्विन मासे दूर्गापूजा' शीर्षक गीत की रचना की है। इस गीत में चाय जनजाति की दुर्गापूजा और उससे जुड़े *झुमुर नृत्य* और इन कार्यक्रमों में

इस्तेमाल होनेवाले लोकवाद्यों जैसे - *ढाक, मादल* आदि का नामोल्लेख हुआ है। साथ ही, चाय जनजाति की वेश-भूषा जैसे - लाल *शाड़ी, नोलुक, ताबिज*, कानों में पहनने वाला कदम फूल आदि से सज्जित एक चाय जनजाति की युवती का सौंदर्य-वर्णन हुआ है।

2.11. ग्रामीण युवती का चित्रण :

असमीया ग्रामीण जीवन की युवती का सार्थक चित्र खींचने का प्रयास भूपेन हाजरिका द्वारा रचित 'गाँवरे जीयरी सपोन सुंदरी' गाने में हुआ है। असमीया ग्रामीण युवतियों के व्यवहार में जिस प्रकार सादगी भरी हुई है उसी प्रकार उनका रूप-सौंदर्य अकृत्रिम व मनमोहक है। इस अकृत्रिम सौंदर्य का वर्णन भूपेन हाजरिका ने इस प्रकार किया है -

देहर बरण मोर चंपाफुलीया
चुलिर बरण मोर एंधार कॅलीया
खोजत मलया बय।
गाँवरे धाननिरे मयेइ दावनी
मुगारे रिहाखनिर मयेइ बोवनी
मोक देशेइ साबटि लय।

(हाजरिका 2015:172)

इन पंक्तियों में कहा गया कि उसके शरीर का रंग चंपा फूल की तरह है तो बालों का रंग अंधरे की तरह काला है। उसके चलने से मलयानील बहती है। वह ही गाँव के खेतों को काटती है। मुगा से बनी हुई रिहा को बुननेवाली वही है।

3. निष्कर्ष :

अपनी जड़ से हटकर की जानेवाली सृष्टि की सार्थकता हमेशा संदिग्ध होती है। यद्यपि भूपेन हाजरिका विश्व नागरिकता के पक्षधर हैं; फिर भी स्वजाति, जाति की सांस्कृतिक सत्ता एवं लोगों के प्रति उनकी चेतना उल्लेखनीय है। उन्होंने अपने गीतों में लोकमन, लोकजीवन, लोकजीवन की शृंखलित समाज-व्यवस्था, लोकभाषा, सांस्कृतिक स्वकीयता और रंगकलाओं का सौंदर्य-वर्णन कर असम की समृद्ध संस्कृति को विश्व में परिचित करवाया। उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि विश्व संगीत-जगत के उज्ज्वल नक्षत्र भूपेन हाजरिका के गीतों में असमीया लोकजीवन की सामग्रिक अभिव्यंजना हुई है। भूपेन हाजरिका के गीत असमीया समाज को प्रतिफलित करनेवाला एक स्वच्छ दर्पण स्वरूप हैं और शायद इसलिए कहा जाता है कि जो भूपेन हाजरिका के गीतों में नहीं है, वह असमीया समाज में भी नहीं है।

ग्रंथ-सूची :

कुमार, थानेश्वर. भूपेन हाजरिकार गीत आरु किचु प्रासंगिक कथा. गुवाहाटी : अशोक बुक स्टॉल, 2011.

गोस्वामी, लोकनाथ. भूपेन हाजरिकार जनसांस्कृतिक परिक्रमा. गुवाहाटी : स्टूडेंट्स स्टोर्च, 2005.

दत्त, दिलीप कुमार. भूपेन हाजरिकार गीत आरु जीवन रथ. गुवाहाटी : बनलता, 1981.

हाजरिका, सूर्य, संपा. भूपेन हाजरिकार गीत समग्र. गुवाहाटी : एच.एक. शैक्षिक न्यास, 2015.

संपर्क-सूत्र :
सहायक अध्यापक
हिंदी विभाग, पांडु महाविद्यालय
गुवाहाटी, असम
ई-मेइल : udiptatalukdar94@gmail.com
मोबाइल नं॰ : 7002272818